[श्री साधूराम]

होती हैं, वह लोगों का क्या भला कर सकते हैं। देश इन सब बातों से वाकिफ है। वोटर लोग यह जान चुके हैं कि यूनाइटेड फ्रन्ट की जो गवर्नमैंटें बनी हैं वह अलग-अलग अपनी-अपनी डपली बजाया करती थीं। लोग उन्हें अब समझ गये हैं। हरियाण को इस का तजुर्बा हो चुका था, इस लिये उस ने दुबारा यूनाइटेड फंट के हक में वोट नहीं दिया, उन्होंने कांग्रेस के हक में वोट दिया है।

मैं अकाली दल और जनसंघ के भाइयों को मुबारकबाद देता हूं। वह कभी-कभी कहते हैं कि उन को कांग्रेस लड़ाती है क्योंकि वह पहले नाबालिग थे, बच्चे थे। चूंकि सन्त फतेह सिंह और मास्टर तारा-सिंह और जन संघ वाले नाबालिग थे इस लिये कांग्रेस उन को लड़ाती थी। अब वह बालिग हो गये हैं, उन में काफी समझ आ गई है। मैं उन को मुबारकबाद देता हूं कि उन में अक्ल आ गई है। वह अब अपनी नाबालिगी की बात छोड़े और डट कर जन संघ और अकाली दल एक साथ चलें। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि आगे भी वह ठीक से चल नहीं पायेंगे। वह भानुमती का पिटारा न पहले चल सकता था और न आगे चल पायेगा। कहीं की ईट, कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा, जब यह हाल है तो वह लोगों के लिये कैसे अच्छी गवर्नमैंट सिद्ध हो सकती है।

मैं इस सरकार को मुबारकबाद देता हूं कि उस ने पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया, क्योंकि इस के अलावा और कोई तरकीब नहीं थी। अब मैं यही कहना चाहता हूं कि आप गवर्नमैंट की तरफ से लोगों की तकलीफों को रफा करवाने की कोशिश करें।

15-42 hrs.

RE-INCIDENT IN THE PUBLIC GALLERY

MR. CHAIRMAN: Shri S. M. Joshi.

SHRI NATH PAI (Rajapur): Sir, before you proceed, I want to ask of you to guide us in this matter. Under Rule 387A it is said:

> "An officer of the Secretariat authorised in this behalf by the Speaker shall remove from the precincts of the House or take into custody, any stranger whom he may see, or who may be reported to him to be, in any portion of the precincts of the House which is reserved for the exclusive use of members, and also any stranger who, having been admitted into any portion of the precincts of the House, misconducts himself or wilfully infringes the regulations made by the Speaker under rule 386 or does not withdraw when the strangers are directed to withdraw under Rule 387 while the House is sitting."

Mr. Chairman, you are aware of the very sad and disturbing incident that took place.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): Sir, how does it arise now?

SHRI NATH PAI: I have quoted the rules. I would like the hon. Minister to read the rules.

Sir, this incident took place this morning. We have been thinking that the House will be informed about it. Of course, we appreciate the difficulties of the Security Guard in seeing that nobody disturbs. On the other hand I must be failing in my duty if I do not say that none of us was happy to see that young lady being manhandled by the Security staff. The Security Guards must have more lady members. I do not think you were happy to see the way

in which she was dragged away. Nobody would like the proceedings to be disturbed. If anybody disturbs the proceedings we should be fully concerned about it. But if out of patriotic emotions a young lady protests--they may not be familiar with the rules......

SHRI RANDHIR SINGH: He is right. I saw it myself.

SHRI NATH PAI: We are all disturbed about it. I would like that an official statement should be made as to what transpired and why that girl received such a harsh treatment as was meted out to her. Sir, I am conveying to you the feelings of distress we experienced when we saw that young lady being dragged away.

MR. CHAIRMAN: I will convey your tentiments.

SHRI NATH PAI: This comes within your purview under the rules.

15-44 hrs.

STATUTORY RESOLUTION *RE*. PROCLAMATION IN RELATION TO PUNJAB; AND PUNJAB STATE LEGISLATURE (DELEGATION OF POWERS) BILL—*Contd*.

श्री एस० एस० जोशी (पूना) : सभापति महोदय, जो प्रस्ताव प्रस्तुत है वह पंजाब में जो राष्ट्रपति का शासन चल रहा है उस के बारे में है। आज पंजाब ऐसी नाजुक अवस्था से गुजर रहा है, जिस को देखते हुए मुझे यह कहना पड़ता है कि किसी भी कारण से क्यों न हो, मगर यह परिस्थिति प्रस्तुत है और मैं हुकूमत को बधाई देता हूं कि उस ने वहां पर राष्ट्रपति का शासन लागू किया। वहां पर इस के अलावा कोई और चारा भी नहीं था और ऐसा करना जरूरी भी था।

इस के कारणों में जा कर पार्टियों के एक दूसरे के नाम रखने से कोई फायदा नहीं होगा। हम लोग इस देश में लोकतन्त्र चाहते हैं, लेकिन लोकतन्त्र कोई ऐसी चीज नहीं है, जिस को हम बाजार से ला सकते हैं। यह इतना बड़ा देश है, इस में भिन्न जातियों के भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले और भिन्न धर्मों के लोग रहते हैं और यहां विकास भी एक विषम मात्रा में हुआ है। ऐसे बड़े देश में, जो दुनिया का सब से बड़ा लोकतन्त्र है उस को कामयाब बनाना कोई आसान चीज नहीं है।

इस देश में बीस साल तक एक दल का राज्य रहा। उस ने कुछ अच्छे काम भी किये, लेकिन जनता का दिल उन से ऊब गया था। उस के कुछ ऐसे कारनामे रहे जिन से जनता नाराज हो गई। हो सकता है कि बहुत दिन राज्य करने के कारण भी वह उस से नाराज हो गई हो, लेकिन लोकतन्त्र का तकाजा है, और उस की खूबी भी यही है कि लोगों को अधिकार होता है कि जिन शासकों को वह चाहें उन को चुन कर गद्दी पर बिठलायें।

यहां परिस्थिति यह हुई कि जब कांग्रेस राज्य चला रही थी, तब देश की अधिक प्रगति न होने के कारण, हमारे यहां सेयासी बेदारी न होने के कारण जो लोकतन्त्र को मानने वाली दूसरी विरोधी पार्टियां हैं वह खड़ी नहीं हो सकी इस में दोष किसी का भी क्यों न हो, लेकिन जो परिस्थिति है उस को मान लेना चाहिये। चूंकि लोग कांग्रेस से नाराज हो गये थे इस लिये उन्होंने उस को हराया और जब उस की मैजारिटी खत्म हो गई तब लोगों के सामने यह सवाल आया कि वह जनता की इच्छा को कैसे पूरा करें। जब पहले हम लोग यहां आये तब कांग्रेस ने भी इस की सराहना की और राष्ट्रपति के अभिभाषण में भी यह कहा गया कि लोगों की डिमाक्रेटिव वाइटैलिटी दिखलाई दे रही है और उस वाइटैलिटी को जिन्दा रखना है।